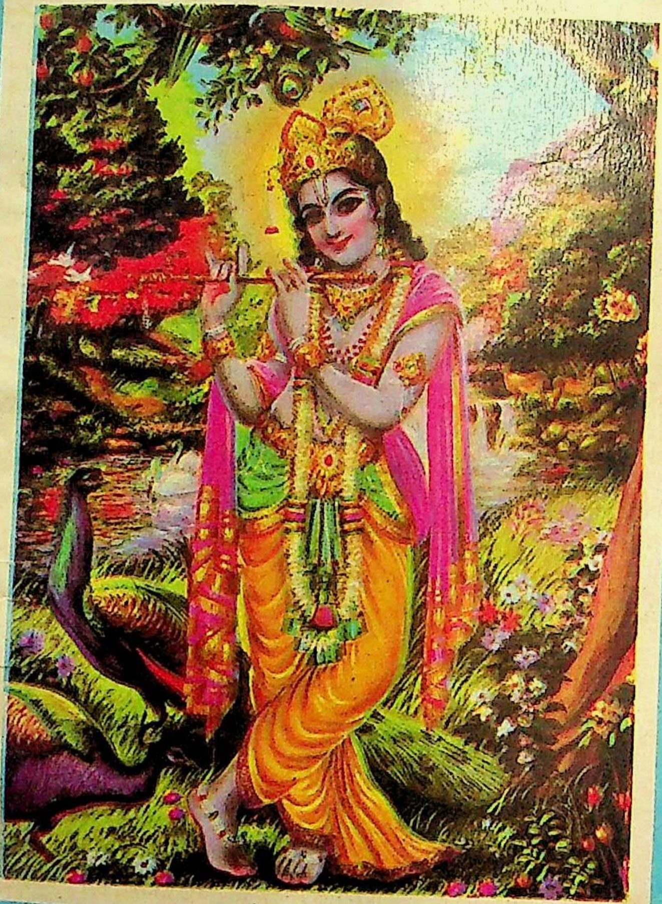
श्रीकृष्ण
भजनमाला





॥ ऊँ श्री गोविन्दाय नमः ॥

3483

श्री कृष्ण भजन माला

K. P. SABHA AMBEHA
LIBRARY
No..........
Date.........
JAI M

★●★

लेखिका—
श्रीमति शकुन सक्सेना

मूल्य——३.०० रुपए

प्रकाशक :
बी०एस०प्रमिन्दर प्रकाशन
१ ए, इन्द्रा पार्क एक्सटेंशन,
चन्द्र नगर दिल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-२४६४०१

मुख्य वितरक—
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार २४६४०१

लेखिका : श्रीमति शकुन सक्सेना

मूल्य : ३.०० रुपये

मुद्रक :
चौहान प्रिन्टर्स
२०८ न्यू लायलपुर कालोनी
चन्द्रनगर दिल्ली-११००५१

॥ ओ ३ म ॥

भजन

आशा पूरी करो, इच्छा पूरी करो, भगवान मेरे,
दीनानाथ मेरे।

माटी के गड़वे में जल ले आई,
स्नान करो, भगवान मेरे, दीनानाथ मेरे। आशा०
केले के पत्ते पे फूल रख लाई,
शृंगार करो, भगवान मेरे, दीनानाथ मेरे। आशा०
आटे की लोई पे बाती रख लाई,
प्रकाश करो, भगवान मेरे, दीनानाथ मेरे। आशा०
टाट का टुकड़ा शयन को लाई,
विश्राम करो, भगवान मेरे, दीनानाथ मेरे। आशा०
'दासी' तुम्हारी दरश की प्यासी,
अङ्गीकार करो, भगवान मेरे, दीनानाथ मेरे। आशा०

भजन

तेरा नाम है सच्चा प्यारे प्रभो, तुम नाव-
किनारे लगा दोगे ।।
मैं नाव में बैठी, गर्व लिये,
पर वह हिचकोले खाती है,
अपराध क्षमा कर मेरे प्रभो, तुम नाव-
किनारे लगा दोगे ।।
दीनन को तूने विपत हरी,
सदा साथ निभाया है उसका,
इस ही आस पे बैठी हूं मैं प्रभो, तुम नाव-
किनारे लगा दोगे ।।
'दासी' की विनती है तुम से,
मंझदार में छोड़ो ना उसको,
तन-मन अर्पण करती तुझको, तुम नाव-
किनारे लगा दोगे ।।
तेरे नाम है सच्चा प्यारे प्रभो, तुम नाव-
किनारे लगा दोगे ।।

भजन

भगवान बता चरणों में तेरे, मैं कैसे शीश नवाऊंगी,
दीनानाथ चरणों में तेरे, मैं कैसे शीश नवाऊँगी।
तेरा नाम सुमिरने बैठी तो,
मेरा मन भटका चहुं ओर दिशा,
भगवान बतादे तू मुझको, मैं कैसे तुमको पाऊँगी।
दीपक की बाती जलाई थी,
तेरी ज्योति उतारन को प्रभो जी,
मेरे हाथ कांपने लगे प्रभो, मैं कैसे तुझे मनाऊंगी।
तेरा भोग बनाने को मैं गई,
पर जल कर हलवा खाक हुई,
मेरे नेत्रों की ज्योति क्षीण हुई, अब कैसे भोग लगाऊंगी।
तेरे मन्दिर में दरशन को चली,
पर पैर नही उठते मेरे,
चलने से अवश हुई हूं मैं, अब कैसे दरशन पाऊंगी।
हर साँस में तेरा ही है नाम,
हर राह पे तेरी ही है आस,
'दासी की नैय्या पार करो,
बस प्रभो चरनन में आऊंगी।
भगवान बता चरणों में तेरे,
मैं कैसे शीश नवाऊंगी ॥

भजन

विनय करू कर जोड़, प्रभो जी बेड़ा पार करो। १
बोध सींच मैंने बगिया लगाई,
सुन्दर-सुन्दर फूल खिले वामे,
खुशबू बहुत पाई, प्रभो जी बेड़ा पार करो। २
फूलों से मेरा अंगना मंहका,
पुलकित रोम-रोम मेरा चँहका,
वर्णन ना कर पाई, प्रभो जी बेड़ा पार करो। ३
फूल ना मेरे झरने पाये,
अंगना मेरा सदा लहलहाये,
विनती यही कीन्ही, प्रभो जी बेड़ा पार करो। ४
'दासी की बगिया हरी भरी रखना,
दुःखो से दूर, और सुखों से भरना,
रहे सदा महकाय, प्रभो जी बेड़ा पार करो॥
विनय करु कर जोड़, प्रभो जी बेड़ा पार करो॥

भजन

लाज के रखैया तुम हो, मेरे कृष्ण कन्हैया॥
रुपया पैसा तुमने दीना,
अन्न-धन से भरपूर,
खर्चय्या भी तूमने दीना, मांग सिंदूर भरपूर। लाज०

कोठी बंगला तुमने दीना,
सज्जा से भरपूर,
वास करन को दासी दीन्हें, ममता से भरपूर। लाज०
गाय बछड़ा तूने दीन्हें,
दुधवा से भरपूर,
ग्वाला आये गाय चरावन, पैसा ले भरपूर। लाज०
मेरी बिनती सुन के प्रभो जी,
पूरण रखना ध्यान,
'दासी' बलैय्या तेरी लेगी, छोड़ के तन मन प्राण ॥
लाज के रखैया तुम हो मेरे कृष्ण कन्हैया ॥

भजन

मटुकिया फोरी, मटुकियाफोरी,
तोरे लला ने मटुकिया फोरी।
डंडा से मैं तोय पिटवाऊं,
जाय कहूंगी मात यशोदा,
मटुकिमा फोरी, मटुकिया फोरी,
तोरे लला ने मटुकिया फोरी ॥ तोरे

मात यशोदा गले लगावे,
हिचकी भर-भर राधा रोवे,
मटुकिया फोरी, मटुकिया फोरी,
तोरे लला ने मटुकिया फोरी ॥ तोरे
अपने घर में कैसे जाऊं,
घबराई हैं राधा गोरी,
मटुकिया फोरी, मटुकिया फोरी,
तोरे लला ने मटुकिया फोरी ॥ तोरे
कृष्ण कन्हैया बड़े नटखट हैं,
'दासी' तुमरी कहेगी सब जग से,
मटुकिया फोरी, मटुकिया फोरी,
तोरे लला ने मटुकिया फोरी ॥ तोरे

भजन

मन मोहन कृष्ण कन्हैया, तुमने गोपियों को छेड़ा।
रोती कलपत घर को भागीं लीन्ही किवडिया भेड़।
पीछे-पीछे तुम भी भागे लीन्ही चुटिया खेंच। २

ग्वाल-बाल तेरे आगे-पीछे करते हैं मनुहार।
तूने गेंद जमुना जल फेंकी, और गये तुम कूद। २
मात यशोदा दौड़ी आई, ग्वाल सखा तेरे रोवे।
काली नाग नाथ के आये, कीन्हा सब को दंग। ३
'दासी' चढ़ावे तुलसी पाती, और कुछ नहीं पास।
उसकी विनती अवश्य सुनोगे, नहीं करोगे तंग। ४
मन मोहन कृष्ण कन्हैया, तुमने गोपियों को छेड़ा।

भजन

चली डगर मेरी रोके श्याम, चली डगर...
दधि की मटकी शीश धरे मैं,
आयो अचानक मैं नहीं देखी,
भरी मटकी मेरी तोड़ी श्याम, चली डगर...
रोय पड़ी थी, मैं अँसुअन से,
बंसी तान सुनाय दई है,
चली डगर मेरी रोके श्याम, चली डगर...
बंसी धुन सुन सब कुछ भूली,

ओ मुरली श्याम मनोहर, तूने माखन क्यों चुराया।
मइया तेरी मारन दौड़ी,
तो तू रूप अनेक दिखावे,
ठगी खड़ी हैं माता तेरी, समझ नहीं कुछ आत॥
ओ मुरली श्याम मनोहर, तूने माखन क्यों चुराया।
'दासी तिहारी भई अचम्भत,
तेरी इस लीला से,
कितने काम किये हैं तूने, लीलाएं सब रचके।

भजन

मेरी टेर सुनो गिरधारी, तुम कहां छिपे बनवारी।
मोह माया मैं तज कर आई,
तेरे चरनन शीश नवाने,
दरशन देओ मुरारी। तुम कहां छिपे बनवारी।
जब भी जिसने तुझ को चाहा,
तब तब वह तुझ को है पाया,
मेरी भी सुनो मुरारी। तुम कहां छिपे बनवारी।
नाते रिश्ते सब हैं झूठे,

फिर क्यों इस माया में भटके,
उद्धार करो मुरारी तुम कहाँ छिपे बनवारी।
इस काया का क्या है भरोसा,
जब तब देती है ये धोखा,
अब त्याग ही उत्तम मुरारी। तुम कहां छिपे बनवारी।
'दासी का जीवन सुखमय कर दो
मोह माया से मुक्ति दे दो,
बस शरण में लेओ मुरारी। तुम कहाँ छिपे बनवारी।

भजन

मन कृष्ण कन्हैया रे,
झट आकर तुझे मनाऊंगी
थोड़ा सा जल मैं ले आऊ,
उस जल से चरनन को धोऊं,
झट चरणामृत पी जाऊंगी।
मन मोहन कृष्ण कन्हैया रे ॥
तुलसी की पाती में ले आऊं,
उस का तुझ को भोग लगाऊं,

झट जूठन तेरी खाऊंगी।
मन मोहन कृष्ण कन्हैया रे॥
खादी का टुकड़ा भी ले आऊं,
उस पर तुमको शयन कराऊं,
झट चरनन रज पा जाऊंगी।
मेरी सुन लो नन्द बाबा तुम,
ना चाहूं जीवन धन अब मैं,
झट शरण में तेरी आऊंगी।
मन मोहन कृष्ण कन्हैया रे॥
निराश करो ना 'दासी' को अपनी,
आशा लेकर आई प्रभु जी,
झट जीवन मुक्ति पाऊंगी।
मन मोहन कृष्ण कन्हैया रे॥

भजन

माधो कृष्ण मुरारी तुझको बारम्बार प्रणाम। तुझ०
मुरली अधर बजइया, तुझको बारम्बार प्रणाम॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,
गल वैजन्ती माला। तुझको बारम्बार प्रणाम।

अधर मुरलिया, कांधे कमरिया,
मस्तक पे त्रिशूल । तुमको बारम्बार प्रणाम ॥
राधे के तुम प्राण प्यारे,
जोड़ी अपरम्पार । तुझको बारम्बार प्रणाम ॥
देवकी ने तोय जन्म दिया,
पर बनी यशोदा माता । तुझको बारम्बार प्रणाम ॥
सुमिरन करके 'शकुन' तुम्हारी,
पुलकित होवे गात । तुझको बारम्बार प्रणाम ॥

भजन

कहलाये गोकुल वासी, और जाय बसे वृन्दावन में ।
तेरी राह देखती हैं गोपियां,
और संगी साथी सुस्त हुए ।
राधे व्याकुल-व्याकुल सी हैं । तुम जाये…
गोपी संगी साथी तोरे,
सब सोच में डूबे बेचारे ।
राधे कहती कब आयेंगे । तुम जाये…

सूनी-सूनी सब नगरी है,
तेरे बिन कृष्ण कन्हैया जी।
कब रास रचाने आओगे। तुम जाये…
सारी गऊयें तुम बिन तड़पी,
दाना पानी सब हैं छोड़ा।
एक बार बंसुरिया सुना दो जरा। तुम जाये…
'शकुन' अभिलाषा दर्शन की,
शरण में ले लो तुम उसको।
मंझधार पड़ी है तुमरे बिन। तुम जाये…

———

भजन

कृष्ण ने बंसी बजाई, चलो सुन के आवें।
बैठे जाय कदम की छइयां,
छिप छिप बंसी बजाई, चलो सुन के आवें।
वन-वन जाके धेनु चरावें,
नटवर कृष्ण कन्हाई, सुन के आवें।
गोपिन के संग रास रचावें,
लता पे चीर लटकाई, चलो सुन के आवें।

ढूंढ़त ढूंढ़त राधा थक गई,
तबहूं ना दीखे कन्हाई, चलो सुन के आवें।
छवि कृष्ण की नाहीं दीखी,
'शकुन' तो है बौराई, चलो सुन के आवें।

भजन

देवकी ने तोय जनम दिया,
और लाल कहाये यशोदा के
संहार कंस का करने को,
अवतार लिया जगतारन को।
मात यशोदा दही बिलोवे,
चुटिया मल दे माखन से।
तोड़-फोड़ तुम मटकी भागो,
माता को खिजावन को।
यशोदा मइया पीछे भागी,
तोको डंडा मारन को।
रूप अनेक धरे तुम अपने,
माता को रिझावन को।

पनिया भरन को राधा निकली,
उनकी मटकी फोड़ दियो।
दै-दै ताली हंसो कन्हैया,
वा को और रिसावन को।
साथी सुदामा मिलने पहुंचे,
सहमे और सकुचाये से,
नंगे पैरों भाग लिए तुम,
उनको गले लगावन को।
महिमा अपरम्पार है तेरी,
बरन न कीन्ही जाय सके।
'शकुन' तुम्हारी आय रही है,
चरनन की रज पावन को।

भजन

क्यों तुम रूठ गये बनवारी,
क्यों तुम रूठ गये बनवारी।
सब भक्तन की भीर लगी है,
काहे ना दरशन देओ मुरारी।

क्यों तुम रूठ गये बनवारी,
सब दीनन के दुःख हर लेते।
सदा कहाये तुम हितकारी,
क्यों तुम रूठ गये बनवारी।
तेरे दरश बिन जीवन सूना,
ना अनजान बनो गिरधारी।
क्यों तुम रूठ गये बनवारी।
'शकुन' की विनती भी सुन लेना।
देओ दया का दान मुरारी,
क्यों तुम रूठ गये बनवारी।

भजन

मेरी आस बने ना प्यास, प्रभो जी तेरे द्वार खड़ी।
आशा निराशा का झूला पड़ा है,
निराशा का कर दो विनाश। प्रभो जी तेरे...
दुख-सुख हैं जीवन के साथी,
दुःखों का कर दो त्याग। प्रभो जी तेरे...
निर्धन-सुखिया, सब हैं तेरे,
निर्धन की सुन लो पुकार। प्रभो जी तेरे...

SABHA
LIBRARY
No.........
Date.........
JAMMU

ज्ञानी-अज्ञानी सब हैं तेरे
अज्ञान का हर लो विकार। प्रभो जी तेरे…
'शकुन' की विनती है प्रभो तुमसे,
सभी पर रखना कृपा की दृष्टि,
कोई ना हो असहाय। प्रभो जी तेरे…

भजन

मैंने ठोकर खाई भारी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी।
अन्न-धन कपड़ा तूने दीना,
सब विधि मुझको पूरण कीना,
फिर क्यों हुई भिखारी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी
पति और बच्चे तूने दीन्हे,
अंगना कमरा सुखमय कीन्हा।
फिर क्यों हुई दुखारी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी।

तिनका-तिनका जोड़ जुटाया,
अपने घर को महल बनाया।
फिर क्यों हुई बेसहारी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी।
आशाओं का बाग लगाया,
अरमानों से सींचा-बोया,
फिर क्यों हुई उजाड़ी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी
सोच-सोच कर हरपाती थी,
मन को वश में रख पाती थी।
फिर क्यों हुई अनारी,
मेरी बाँह थाम गिरधारी।
'शकुन' तुम्हारी टूट गई है,
थक कर भी वह चूर हुई है,
भाग्य ने ठोकर मारी,
मेरी बाँह थाम गिधारी।

———

भजन

तेरी मुरली की धुन सुन के प्रभो,
सब गोपियां दौड़ी आती हैं
भटके जंगल में चारों ओर,
पर ढूंढ़ नहीं तुझे पाती हैं
तेरी लीला अपरम्पार रही,
कोई जान सका है ना तुझको,
इस श्याम सलोने की संगत,
सबके ही मन को भाती है
तेरा नाम रटत है सारा जग,
तुझे अर्पण करता तन-मन-धन,
इस श्याम सलोने की मूरत,
सबके ही मन को भाती है।
तुम काम अनेक अपार किये,
महिमा का कोई पार नहीं,
इस श्याम सलोने की गरिमा,
सबके ही मन को भाती है।
'शकुन' तुम्हारे मन्दिर में,
दर्शन करने को आई थी,
पर उसको दर्शन हो ना सके,
ये सोच-सोच पछताई है।

भजन

बनवारी रे, बंसी की तान सुना जा,
ओ गिरधारी रे, बंसी की तान सुना जा।
बंसी धुन-सुन गऊयें बिलखीं,
बनवारी रे, गऊओं को चारा चरा जा।
बंसी धुन-सुन गोपियाँ भटके,
बनवारी रे, उनको राह बता जा।
ग्वाय-बाल सब तड़पें धुन-सुन,
बनवारी रे, उनको गले लगा जा।
बंसी धुन-सुन, राधे बनी हैं दिवानी,
बनवारी रे, उसको नाच नचा जा।
धुन-सुन बंसी 'शकुन' बौराई,
बनवारी रे उसको दरश दिखा जा।

भजन

मैं ढूंढ़त-ढूंढ़त हारी,
तुम कहाँ छिपे गिरधारी।
डगमग-डगमग नैया डोले,
इधर न जावें, उधर न जावें,

कैसे करूं मैं पार मुरारी ।
दुःखियों के तुम दुःख हर लेते,
सुन पुकार बस दौड़े आते,
नैया करो मेरी पार नटवारी ।
मेरे हमदम सच्चे साथी,
बन जाओ तुम, बस ये चाहती,
मेरी बिगड़ी देओ संवार नन्द दुलारे ।
सब कुछ पाकर चरणों में आयी,
कुछ ना गवाऊं, मैं प्रभो चाहूं,
'शकुन' की दे दो मुक्तिदान मुरारी ।

भजन

ओ मेरे श्याम सलोने, तुझे छोड़ कहां मैं जाऊं ।
तुझे छोड़ कहीं भी जाती,
मन चैन नहीं मैं पाती,
अब तूही बता गिरधारी, तुझे छोड़ कहां मैं जाऊं ।
एक लिया सहारा तेरा,
तुझ बिन कोई ना मेरा,

अब तू ही बता गिरधारी, तुझे छोड़ कहां मैं जाऊं।
कुछ वश नहीं है अपना,
परवश हूं मेरे दाता,
अब तू ही बता गिरधारी, तुझे छोड़ कहां मैं जाऊं।
मेरा हमदम तू बन जा,
सच्चा साथी तू बन जा,
अब 'दासी' का कहीं ना ठौर, तुझे छोड़ कहां मैं जाऊँ।

भजन

मैं हरि चरनन की दासी,
फिर बनी हुई क्यों प्यासी।
ये तो मैंने माना है, मुझे ज्ञान नहीं कुछ तेरा,
क्या इतना काफी नहीं है,
कि मैं बनी तुम्हारी दासी। मैं०
यदि नाम ना लिया तुम्हारा, पर साथ तेरा ही चाहा,
क्या इतनी काफी नहीं है,
कि मैं बनी तुम्हारी साथी। मैं०
तेरी फेरूंगी माला मन से उद्धार करो तुम जग से,

क्या इतना काफी नहीं है,
कि मैंने जग से किया किनारा। मैं०
प्यासी की प्यास बुझाओ, 'दासी' को शरण लगाओ,
मैं हरि चरनन की दासी,
फिर बनी हुई क्यों प्यासी।

भजन

कान्हा बंसी बजावें छिप-छिप के,
हम ढूँढ़े तुमको कहां-२ हम ढूँढ़े तुमको-
कहाँ कहाँ।
राधे बोली जो सताओगे,
हम लौट के घर को जायेंगे,
फिर हाथ तुम्हारे ना आयेंगे,
हम ढूँढ़े तुम को कहाँ कहाँ। हम०
राधे खिसायीं, रोष भरी
धर हाथ कमर पर लौट चलीं,
अब हम को भी क्या गरज़ पड़ी,
हम ढूँढ़े तुम को कहां कहां। हम०

कान्हा कूद कदम की डाली से,
मनुहार करन को राधा से,
राधा प्यारी तुम कहां गई,
हम ढूंढ़े तुम को कहां कहां।
कान्हा बंसी बजावे छिप-छिप के,
हम ढूंढ़े तुमको कहां २ हम ढूंढ़े तुमको-
कहां कहां।

भजन

मैं भटकत-भटकत हारी, मोहे दरशन देओ मुरारी
मैं जंगल २ घूमी,
कांटों पत्थर को झेली,
तबहुं ना मिले गिरधारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।
मैं मोह बन्धन को तजकर,
तेरा नाम सुमिरती हर पल,
तबहूं ना मिले गिरधारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।
मैं गई तीर्थ यात्रा को,
मन्दिर मन्दिर में खोजा,

तबहूं ना मिले गिरधारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।

पाथर माटी में ढूंढूं,

हर लता डाल से पूंछूं,

तबहूं ना मिले गिरधारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।

किस विधि तुम को मैं पाऊं,

तेरी 'दासी' बिलख रही है,

विनती सुन लो गिरधारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।

मैं भटकत-भटकत हारी, मोहे दर्शन देओ मुरारी।

भजन

कान्हा मेरे बड़े छलबलिया,

बड़े छलबलिया बड़े छलबलिया।

कान्हा मेरे बड़े छलबलिया।

मटुकी शीश धरे राधा निकली,

पाथर मार मटुकिया फोड़ी।

बड़े छलबलिया बड़े छलबलिया

कान्हा मेरे बड़े छलबलिया।

गोपिन के संग रास रचावें,
बंसी बजा के मन को लुभावें ।
बड़े छलबलिया, बड़े छलबलिया,
कान्हा मेरे बड़े छलबलिया ।
मात यशोदा दही बिलोवे,
माखन ले ले तुम हो भागे ।
बड़े छलबलिया, बड़े छलबलिया,
कान्हा मेरे बड़े छलबलिया ।
मुझ 'दासी' को बहुत सताते,
कितना कहती दरश न देते,
बडे छलबलिया बड़े छलबलिया,
कान्हा मेरे बड़े छलबलिया ।

भजन

दीन दयाला बना मतवाला,
बंसी बजाई तूने मन को लुभाया ।
बंसी धुन-सुन राधे निकली,
चारों दिशा देखें बौराई ।

काहे को टेर लगाई कान्हा,
दीन दयाला बना मतवाला।
गऊयें बिलख बिलख के रोवें,
दाना छोड़ तुझे वह ढूंढ़े।
काहे को तान सुनाई कान्हा,
दीन दयाला बना मतवाला।
ग्वाल सखा सब तेरे साथी,
सोच में डूबे कुछ ना सुहाता,
काहे को देर लगाई कान्हा,
दीन दयाला बना मतवाला।
कहां छिपे हो कान्हा जल्दी आवो,
आकर सबकी प्यास बुझावो।
काहे को रार मचाई कान्हा,
दीन दयाला बना मतवाला,
'शकुन' तिहारी करती दुहाई,
मत भटकाओ बनो सहाई।
काहे को 'दासी' बनायी कान्हा,
दीन दयाला बना मतवाला।

भजन

ओ मेरे कृष्ण कन्हैया जी'
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।
नंगे पैरों चल कर आये,
छालों से पैर हुए घायल।
एक झलक दिखा दो कन्हैया जी,
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।
भूखे प्यासे घर से निकले,
पेट की ज्वाला निगल रही।
एक झलक दिखा दो कन्हैया जी,
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।
रोवत कलपत बच्चे छोड़े,
उनकी ममता है पुकार रही।
एक झलक दिखा दो कन्हैया जी,
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।
सब से पीछे एक है 'दासी'
केवल वह दर्शन की प्यासी।
एक झलक दिखा दो कन्हैया जी,
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।
ओ मेरे कृष्ण कन्हैया जी,
तेरे द्वारे भक्तन भीड़ लगी।

भजन

यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।
ओ मय्या मोरी कैसा पूत तूने जाया।।
किसी की मटुकी पाथर फोड़े,
काहू की गेंद जमुन जल फेंके।
थक गये करत गुहार।
यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।।
गोपिन के संग करत ठिठोली।
बाल सखा सारे हमजोली।
कान्हा ने जादू चलाया।
यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।।
राधा, कृष्ण, कृष्ण राधे पर,
हुए दीवाने साथ ना छूटे।
मोहनी टोना कराया।
यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।।
समझाओ तुम अपने लाल को,
नहीं चलेगी कोई चाल अब।
छल-बल बहुत दिखाया।
यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।।
यशोदा मय्या कैसा लाल तूने जाया।
ओ मय्या कैसा लाल तूने जाया।।

भजन

ओ मुरली वाले श्याम सुन्दर,
तेरी झांकी बसी मेरे मन में।
झांकी मैं देखूँ राधे कृष्ण,
बांकी छवि से मन हुआ पुलकित।
मैं झूम-झूम बलि जाऊं,
तेरी झाँकी बसी मेरे मन में। ओ०
शीश धरी मोतिन को मुकुट,
कानन में कुण्डल रतन जड़ित।
मैं तुझ पर हुई न्यौछावर हूं,
तेरी झांकी बसी मेरे मन में। ओ०
मुरली धर अधर बजाये रहे,
गोपिन संग रास रचाये रहे।
क्या अदा है कृष्ण कन्हैया की,
तेरी झाँकी मेरे मन में। ओ०
राधे तेरे साथ विराज रही,
शोभा वरणी ना जाय रही।
महिमा का कोई पार नही,
तेरी झाँकी बसी मेरे मन में। ओ०
ओ मुरली श्याम मनोहर सुन्दर,
तेरी झांकी बसी मेरे मन में।

भजन

कन्हैया तूने काहे को तान सुनायी,
ओ मोहन तूने काहे को तान सुनायी
निकली शीश पे धरके मटुकिया,
कन्हैया तूने काहे को पाथर मारी। कन्हैया तूने…
सारो दही या धूल मिलायो,
कन्हैया तोसे कबहूँ ना भेंट करूगी। कन्हैया तूने…
अंसुअन भीगे नयन राधा के,
मैं घर पे जाके माय से क्या कहूंगी। कन्हैया तूने…
रिसयाईं सी माता बोली,
ओ राधे बेटी कहां मटुकिया छोड़ी। कन्हैया तूने…
ओट चुनर कर राधे बोली,
ओ माता मोरी, कृष्ण मटुकिया फोड़ी। कन्हैया तूने…
जाके कहौ, उन मात यशोदा से,
तुम कैसे जाये नटखट लाल कन्हैया। कन्हैया तूने…
कन्हैया तूने काहे को तान सुनायी।
ओ मोहन मेरे काहे को तान सुनायी।

भजन

सखियां रिसावैं, राधे मोहन तेरा काला,
मोहन तेरा काला, कन्हैया तेरा काला। सखियां०
मोहनी सूरत छवि बांकी न्यारी,
श्याम सलोना कन्हैया मेरा, कन्हैया मेरा प्यारा-
कन्हैया मेरा प्यारा ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,
गल शोभे मुतियन की माला, कन्हैया मेरा प्यारा
कन्हैया मेरा प्यारा ॥
अधर मुरलिया कमर कंधनिया,
छमछम बाजे पैर पैंजनिया कन्हैया मेरा प्यारा-
कन्हैया मेरा प्यारा ॥
हंसी करत हूं तोसे राधे प्यारी,
कृष्ण कन्हैया सभी का प्यारा कन्हैया मेरा प्यारा-
कन्हैया तेरा प्यारा ॥
सखियां रिसावें, राधे-मोहन तेरा काला।
मोहन तेरा काला, कन्हैया तेरा काला ॥

भजन

मत कर तू अभिमान भजो श्री हरे हरे
कर काया का क्या है भरोसा

जब चाहे ये दे दे धोखा
मन में तू ये धार भजो श्री हरे हरे—
भाई बन्धु और कुटुम्ब जन
ना सोचो अपना है कोई
कोई ना देगा साथ । भजो श्री हरे हरे—
धन दौलत माटी के पुतले
बह जाते ये धारा जैसे
नहीं रहे तेरे पास भजो श्री हरे हरे—
मोह माया को दूर भगादे
अपने प्रभू से ध्यान लगा ले
नैया लगेगी तेरी पार भजो श्री हरे हरे—

भजन

श्याम नगर में डालूँगी डेरा तजकर सब संसार ।
श्याम है मेरा श्याम की मैं हूं
श्याम ही मेरा द्वार
श्याम बिना मुझे कुछ न सुहावे श्याम ही मेरा ताज ।
श्याम ही शक्ति श्याम ही मुक्ति
श्याम ही मेरा उद्धार
श्याम सखा और जीवन साथी श्याम ही बेड़ा पार ।

श्याम ही मेरी नैनन ज्योति
श्याम ही कर्णधार
श्याम ही मेरे मन में बसे हैं श्याम ही प्राणाधार
श्याम नगर में डालूँगी डेरा तज कर सब संसार

भजन

तेरी लीला बड़ी ही अपार है रे
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे
तू जो चाहे तो रंक को राजा बना दे
तू चाहे तो मुरदे को जिला के उठा दे
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे,
तेरी लीला बड़ी ही अपार है रे।
आया तेरी शरण जो भी भक्ति में लीन
तूने दुःखियों के दुःखों को किया विलीन
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे,
तेरी लीला बड़ी ही अपार है रे।
भटके राही को राह दिखाते हो तुम
लेते उसको शरण में जो आये शरण
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे
तेरी लीला बड़ी ही अपार है रे।

भेंट सखा सुदामा ने आकर के की
उन के चरणों की रज तुमने माथे पे ली
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे
तेरी महिमा बड़ी ही अपार है रे

देवी भजन

माता तो आई मेरे द्वार सब जै–जै बोलो।
पूरण करेंगी सारे काज सब जै–जै बोलो॥
माता के शीश पे मुकुट विराजे
जगमग-जगमग होय सब जय-जय बोलो। माता
कानों में कुण्डल नाक नथुनियां
शोभा वरणी ना जाय सब जय-जय बोलो। माता
लाल चुनरिया माता के तन पर
गल में शोभित माल सब जय-जय बोलो। माता
कमर कंधनिया पैर पैंजनियां
रुनझुन–रुनझुन होय सब जय-जय बोलो। माता
रूप माता का देख-देख के
'दासी' तो हुई है निहाल सब जय-जय बोलो।
माता तो आयी मेरे द्वार सब जय-२ बोलो।
पूरण करेंगी सारे काज सब जय-जय बोलो॥

भजन

तेरे अंगना लगी है भीर
जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर।
जब तेरे अंगना निर्धन आया
अन्न के बोरे खुलाये
जब तेरे अंगना लंगड़ा आया
दीनी बैसाखी छोड़
जगदम्बे अंगना लगी है भीर।
जब ते अंगना अन्धा आया
दीनी नैनन की ज्योति
जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर।
जब तेरे अंगना बांझन आयी
पूतन से भर दीनी गोद
जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर।
जब तेरे अंगना सुखिया आया
ज्ञानों के भरे भंडार
जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर।
जब तेरे द्वारे 'शकुन' आई
कर दीना उसका उद्धार

जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर।
तेरे अंगना लगी है भीर।
जगदम्बे तेरे अंगना लगी है भीर॥

भजन

बड़ी आशा लेके चरणों में आई तोरी मइया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल
चढ़ावन आई चरणों मैं मय्या। बड़ी०
लाल चुनरिया गोटा लगाके
सजावन आई कांधों को तोरी मैं मय्या। बड़ी०
ललना को अपने मैं ले आई
गिराऊं उसको चरणों में तोरी मैं मय्या। बड़ी०
'शकुन' आई बोझ लाद के
उतारूंगी चरणों में तोरी मैं मय्या। बड़ी०
बड़ी आशा लेके चरणों में तोरी मैं मय्या।

भजन

तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
प्रसन्न हो जाना ओ अम्बे मइया ।।
क्या चढ़ाऊं तुम्हें समझ ना पाऊं
बीड़ा बताशे चढ़ा दूं
तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
क्या पहनाऊं तुम्हें समझ ना पाऊं
लाल चुनरियां पहना दूं
तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
किस पे सुलाऊं तुम्हें समझ ना पाऊं
फूलों की सेज सुला दूं
तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
तेरा ही दिया मइया तुझे खिलाया ।
तेरा ही दिया मइया तुझे पहनाया ।।
'शकुन' तो दासी तेरी
तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
तुम खुश हो जाना ओ दुर्गे मइया ।
प्रसन्न हो जाना ओ दुर्गे मइया ।

भजन

माता ना सुनें पुकार मेरी
सर पटकत पटकत मैं हूं मरी।
हे माता अब सौभाग्य जगा
हुई परीक्षा पूरी है
अब और ना ले मेरी परीक्षा
सर पटकत-२ मैं हूं मरी। माता
काम-धाम और मोह माया में फंस
तेरे द्वार पे आयी ना माता
फर्जों से अब मैं पूरण हुई
अब और ना मुझे फंसा माता। माता
बचपन खेल बिताया था
यौवन घर अंगना सजाया था
अब आया बुढ़ापा चरणों में ले
मानव तन को पूरण कर दे। माता
'शकुन' को अपनी शरण में लो
अब कुछ ना सुहाता है उसको
क्यों लोभ तुझे मेरे जीवन का
जो चली बढ़ाये हो माता
माता ना सुने पुकार मेरी।
सर पटकत-२ मैं हूं मरी॥

भजन

दुर्गा माता हरो सबन की पीर
ओ मइय्या मोरी हरो सबन की पीर
ज्योति हीन तेरे द्वार पे आया
मांगे ज्योति अश्रु बहाया
सुन लो उसकी पुकार सबन की पीर हरो। म०
अंगहीन तेरे द्वार पे आया
मांगे आंग बहुत ललचाया
सुन लो उसकी पुकार सबन की पीर हरो। म०
निर्धन तेरे द्वार पे आया
झोली तेरे आगे फैलाया
सुन लो उसकी पुकार सबन की पीर हरो। म०
बांझन तेरे द्वार पे आई
बेटे की वह करे दुहाई
सुन लो उसकी पुकार सबन की पीर हरो। म०
'शकुन' तेरे द्वार पे आई
अपनी विपदा आन सुनाई
सुन लो उसकी पुकार सबन की पीर हरो। म०

भजन

मेरी माता चली आवो छिपी तुम क्यों बैठी । मे०
दरवाजे पर अन्धा खड़ा है
मांगे नैनन की भीख छिपी तुम क्यों बैठी । मे०
दरवाजे पर कोढ़ी खड़ा है
मांगे अंगों की छिपी तुम क्यों बैठी । मे०
दरवाजे पर निर्धन खड़ा है
अन्न-धन की मांगे भीख छिपी तुम क्यों बैठी । मे०
दरवाजे पर बांझन खड़ी है
मांगे वह ललना की भीख छिपी तुम क्यों बैठी ।
दरवाजे पर 'शकुन' खड़ी है
जीवन मुक्ति की मांगे भीख छिपी तुम क्यों बैठी ।
मेरी माता चली आवो छिपी तुम क्यों बैठी ।।

भजन

अपनी मइया के चरण पखारूं माता मेरी लाज रखो
तुमने कीन्हे हैं सदा उपकार दुर्गे मेरी लाज रखो ।
हलवा पूड़ी तुम्हें चढ़ाऊं

नाजों से भरे भंडार दुर्गे मेरी लाज रखो। तु०
लाल चुनरिया तुम्हें पहनाऊं
गोटा किरन से उसे सजाऊं
मने वस्त्रों के भरे भंडार दुर्गे मेरी लाज रखो। तु०
ललना तोरे चरनन डालूं
तूने ही दिया है तुझी को सौंपू
तूने ललना को दीन्हा आर्शीवाद
दुर्गे मेरी लाज रखो। तुमसे०
'शकुन' सौंपे तन मन अपना
सिवा इसके कुछ पास नहीं अपना
तुने कीन्हा है उसका उद्धार
दुर्गे मेरी लाज रखो। तुमने०
अपनी मइया के चरण पखारूं माता मेरी लाज रखो

भजन

मैया ने खोले द्वार सखी तुम जल्दी चलो।
अम्बे ने खोले द्वार सखी तुम जल्दी चलो॥
मात हमारो स्नान करेंगी

चलो चलके करावें स्नान सखी तुम जल्दी चलो।
माता हमारी शृंगार करेगी
चलो चुन के ले आवें फूल सखी तुम जल्दी चलो।
माता हमारी निद्रा भरी हैं
चलो चलके ले आवें सेज सखी तुम जल्दी चलो।
'शकुन' क्या कर पायेगी सेवा
यह तो ले लेगी आशीर्वाद सखी तुम जल्दी चलो।
अम्बे ने खोले द्वार सखी तुम जल्दी चलो॥

भजन

मेरी दुर्गे तुम क्यों रूठ गईं
जगदम्बे तुम क्यों रूठ गईं।
द्वारे आई तेरे भोग ना लाई
झूठा था मैला ला ना सकी
द्वारे आई तेरे भोग ना लाई
झूठा था मैया ला ना सकी
मेरी दुर्गे तुम क्यों रूठ गईं।
द्वारे आई तेरे फूल न लाई
बगिया गई थी मैया चुन न सकी

मेरी दुर्गे तुम क्यों रूठ गईं ।

द्वारे आई तेरे ललना ना लाई
सोच रहा था मैया ला न सकी
मेरी दुर्गे तुम क्यों रूठ गईं ।
द्वारे आई 'शकुन' दर्शन कीन्हे
बौराय गई थी मैया कर ना सकी ।
मेरी दुर्गे तुम क्यों रूठ गईं
जगदम्बे तुम क्यों रूठ गईं ।

भजन

पूरण पूरण करो माई पूरण करो पूरण माई ।
खाली झोली द्वार पे आई
पूत से गोदी भरो माई पूरण पूरण पूरण करो माई ।
भूखी प्यासी द्वार पे आई
पेट की ज्वाला भरो माई पूरण पूरण करो माई ।
अज्ञानी बन द्वार पे आई
शिक्षा पूरी करो माई । पूरण पूरण करो माई ।
शीश झुकाये 'शकुन' द्वार पे आई
अपने चरणों में लेओ माई पूरण पूरण करो माई ।

सुखसागर :—भगवान वेद व्यास जी द्वार रचित, भागवद पुराण जिसमें भगवान के २४ अवतारों की कथा सरल हिन्दी भाषा में दी गई है मूल्य ७५)

प्रेम सागर :—भगवान श्री कृष्ण जी का सम्पूर्ण जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में रु० २०)

श्रीमद् भगवद् गीता :—सम्पूर्ण १८ अध्याय तथा १८ महात्म तथा अनेक देवी देवताओं की आरतियों के साथ साथ इस में हनुमान चालीसा, कमल नेत्र गर्भ गीता आदि भी दिये गये हैं।

सरल हिन्दी भाषा पक्की जिल्द—मूल्य १५)

कृष्ण गीता—(लेखक चक्रधारी बेजर) गीता के सम्पूर्ण १८ अध्याय का पाठ सरल हिन्दी कविता में दिया गया है। पाठ प्रति दिन करने से याद हो जाता है ६४ पृष्ठ की इस गीता का मूल्य केवल २)

चाणक्य नीति

अठारहवां अध्याय—अठारह तथा अनेक अरोग्य महात्म सहित सरल हिन्दी भाषा में मोटे अक्षरों में सजिल्द १५

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :

कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता

बड़ा बाजार, हरिद्वार २४९४०१

K. P. SABHA AMEPHA
LIBRARY
No
Date.
2416
JAMMU

अन्य धार्मिक प्रकाशन

घर बैठे वी. पी. पी. द्वारा मंगवायें

सचित्र **बड़ा महाभारत** सरल हिन्दी भाषा में मूल्य ७०.००	**श्रीमद्भागवद्गीता** भाषा सम्पूर्ण १८ अध्याय १८ महात्म मूल्य १५.००
सचित्र **रामायण** आठों काँड भाषा टीका सहित मूल्य ८०.००	**श्रीमद् भागवत पुराण** भाषा मूल्य ७५.००
सम्पूर्ण **बड़ा सुखसागर** भाषा मूल्य ७५.००	**श्री शिवमहापुराण** भाषा मूल्य ७५.००
श्री दुर्गासप्तशती भाषा मूल्य १०.००	**श्री देवीभागवतपुराण** भाषा मूल्य ५०.००
चाणक्यनीति भाषा टीका मूल्य ६.५०	**भर्तृहरि शत्तक** भाषा टीका मूल्य ७.५०

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता

कर्मसिंह अमर सिंह

पुस्तक विक्रेता—बड़ा बाजार—हरिद्वार -249401